शोध सारांश/ Research Summary

शैक्षणिक संस्थानों में राष्ट्रवाद की समकालीन बहस एवं समाज कार्य हस्तक्षेप

प्रस्तुत शोध में राष्ट्रवाद के शाब्दिक अर्थ, व्याख्या एवं इसकी भारतीय एवं पश्चिमी अवधारणा को रेखांकित करते हुए शैक्षणिक संस्थानों में राष्ट्रवाद की बहस और साथ ही राष्ट्रवाद की इस बहस में समाज कार्य हस्तक्षेप को बताया गया है। प्रस्तुत शोध को पाँच अध्यायों में विभाजित किया गया है। प्रथम अध्याय में राष्ट्रवाद से जुडी पुस्तकों और समाचार पत्रों में राष्ट्रवाद के मुद्दे पर आए लेखों का साहित्य पुनरावलोकन किया गया है। द्वितीय अध्याय में राष्ट्र, राज्य और राष्ट्रवाद की अवधारणा को तथा साथ ही राष्ट्र और राज्य के बीच के अंतर को बताया गया है। तृतीय अध्याय में राष्ट्रवाद और भारतीय राष्ट्रवाद की अवधारणा को बताते हुए उसके उदय को रेखांकित किया गया है तथा राष्ट्रवाद के मूल तत्वों और उससे जुड़े भिन्न-भिन्न विचारों का विश्लेषण किया गया है। चतुर्थ अध्याय अध्याय में शैक्षणिक संस्थानों से शुरू हुई राष्ट्रवाद की बहस का विश्लेषण किया गया है। जवाहर लाल नेहरु विश्वविद्यालय, जाधवपुर विश्वविद्यालय और रामजस कॉलेज से शुरू हुई राष्ट्रवाद की इस बहस के विश्लेषण के लिए समाचार पत्रों और पत्रिकाओं का बहुतायत में अध्ययन किया गया है। पंचम अध्याय में राष्ट्रवाद की समकालीन बहस एवं राष्ट्रवाद की इस बहस में समाज कार्य हस्तक्षेप को बताया गया है।

प्रस्तुत शोध शैक्षणिक संस्थानों में राष्ट्रवाद की समकालीन बहस के उस पक्ष को प्रस्तुत करता है जिसमे दो विपरीत विचारधाराएँ है। राष्ट्रवाद पर देश के सभी शैक्षणिक संस्थानों में विचार विमर्श हुआ। 9 फरवरी 2016 को जवाहरलाल नेहरु विश्वविद्यालय में कुछ अनजान लोगों द्वारा देश-विरोधी नारों के बाद राष्ट्रवाद पर अचानक एक बहस शुरू होती है। राष्ट्रवाद की यह बहस दो भागों में बंटती है, एक देशभक्त और दूसरा देशद्रोही। जवाहरलाल नेहरु विश्वविद्यालय समेत देश के सभी शैक्षणिक संस्थानों में राष्ट्रवाद की यह बहस भाषा, धर्म, अभिव्यक्ति की आज़ादी, असहमति का अधिकार आदि अन्य मुद्दों को समेटे हुए थी। इस बहस में कुछ लोगों का मानना था कि भारत जैसे देश में सामाजिक और राजनीतिक पहलुओं को

लेकर बेहद कमियाँ है और इन कमियों के कारण इस देश में ऐसा कुछ भी नहीं जो गर्व करने लायक हो। यहाँ जातिय भेदभाव चरम पर है, साम्प्रदायिकता यहाँ की राजनीति में मिल चुकी है। भाषा और धर्म के आधार पर यहाँ दूसरे लोगों के साथ भेदभाव आम धारणा बन चुकी है। दूसरा एक समूह था जो इस बात पर जोर दे रहा था कि भारत कई सभ्यताओं का एक राष्ट्र है, जहां कई संस्कृतियाँ आपस में वास करती है। ये संस्कृतियाँ एक ऐसे निश्चित भूखंड पर निवास करती है, जिसे हम भारतवर्ष कहते है। हमें इस भूमि के प्रति सदैव प्रतिबद्ध रहना चाहिए और हमेशा इसकी एकता को बनाए रखने के लिए तत्पर रहना चाहिए।

शैक्षणिक सस्थानों से शुरू हुई राष्ट्रवाद कि ये बहस आज अपने मौजूदा मूल तत्वों से भटकी हुई रही। राष्ट्रवाद का प्रश्न नए सिरे से बहस के केंद्र में था लेकिन शैक्षणिक संस्थानों की यह बहस राष्ट्र की पहचान के विविध रूपों में से केवल राष्ट्र के प्रतीकात्मक रूपों पर हो रही थी। राष्ट्रवाद की बहस का ये मुद्दा पूरे समय अपने केंद्र बिंदु से भटका हुआ रहा। राष्ट्रवाद की यह बहस महज़ दो समूहों तक सिमट कर रह गयी। एक समूह ऐसा था जिसके ऊपर देशद्रोही होने का आरोप लगाया जा रहा था और एक खेमा ऐसा था जो कि अपने सिद्धांतों के आधार पर देशभक्ति की परिभाषा को गढ़ रहा था।

राष्ट्रवाद की जो वर्तमान बहस चली, उस वर्तमान बहस में 'नारों' पर भी चर्चा की गयी। हालांकि ये बहस 'नारों' पर अपनी एक सही चर्चा से काफी दूर नज़र आई। इस बहस में 'भारत माता की जय' जैसे एक नारे पर अच्छा-ख़ासा विवाद उत्पन्न हुआ। विवाद के दौरान एक समूह ऐसा था, जिसकी मांग थी कि भारत माता की जय बोली जाए और एक समूह ऐसा था जो बोल रहा था कि क्या केवल 'भारत माता की जय' बोलने से ये साबित हो जाएगा कि कौन देशभक्त है और कौन नहीं?

शैक्षणिक संस्थानों में राष्ट्रवाद के मुद्दे पर एक बड़ी बहस हुई। राष्ट्रवाद की इस बहस ने समकालीन सभी मुद्दों को समेटा। राष्ट्रवाद की इस समकालीन बहस में वे सभी मुद्दे थे जिन्होंने प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष तौर पर

देश, समाज, राष्ट्र और आम इंसान को प्रभावित किया जैसे कि अभिव्यक्ति की आज़ादी, देशद्रोह, देशभक्ति, हिंसा , भाषा, धार्मिक तनाव, नारा और समानता इत्यादि मुद्दे थे। राष्ट्रवाद के इस व्यापक और संवेदनशील मुद्दे पर समाज कार्य हस्तक्षेप होना बेहद जरुरी कदम है। प्रस्तुत शोध में राष्ट्रवाद के इस मुद्दे पर समाज कार्य हस्तक्षेप को बताया गया है। शैक्षणिक संस्थानों में **काउंसलिंग सेंटर** और **सेल** स्थापित करने और साथ ही **फैकल्टी मेंबर्स** के लिए **ट्रेनिंग ऑफ़ द ट्रेनर (TOT)** की व्यवस्था विकसित करने तथा शैक्षणिक संस्थानों के **कोड ऑफ़ एथिक्स** को सही तरीके से लागू **(Implementation of code of ethics)** करने का प्रावधान रखा गया है। **काउंसलिंग सेंटर** और **सेल** का यह दायित्व होगा कि वह राष्ट्रवाद से जुड़े हर एक मुद्दे को सैद्धांतिक और व्यावहारिक दृष्टि से लोगों को समझाएं और उन्हें बताए कैसे उन्हें राष्ट्रवाद का प्रयोग देशहित में करना है। **ट्रेनिंग ऑफ़ द ट्रेनर (TOT)** के जरिए समाज कार्य का यह दायित्व होगा कि वह फैकल्टी मेंबर्स को इस काम के लिए तैयार करें कि कैसे उन्हें राष्ट्रवाद के मुद्दों पर अपनी निजी विचारधारा को त्यागकर संतुलित दृष्टिकोण को अपनाना है और इस संतुलित दृष्टिकोण के साथ किस तरह छात्रों और आम जनता के बीच राष्ट्रवाद और राष्ट्रवाद से जुड़े मुद्दों को समझाना है। समाज कार्य का यह दायित्व है कि वह शैक्षणिक संस्थान में एक ऐसी व्यवस्था को विकसित करें जो शैक्षणिक संस्थाओं के **कोड ऑफ़ एथिक्स** को उचित तरीके से लागू करे और साथ ही इन मुद्दों पर शैक्षणिक संस्थाओं, अध्यापकों और छात्रों को जागरूक करने के लिए नियमित रूप से कार्यशालाओं का आयोजन करें।

प्रस्तुत शोध में 'विश्लेषणात्मक पद्धति' का प्रयोग किया गया है। द्वितीयक स्रोतों के रूप में राष्ट्रवाद के सैद्धांतिक पक्ष और समकालीन बहस को प्रस्तुत तथा विश्लेषित करने के लिए पुस्तकों, समाचार पत्रों, पत्रिकाओं, शोध प्रबंध और समाचार चैंनलों की बहस इत्यादि का अध्ययन किया गया है।

Contemporary Debate of Nationalism and Social Work Intervention in Educational Institutions.

In the research presented, the literal interpretation of nationalism, interpretation and underlining its Indian and Western concept, in the debate of nationalism in academic institutions, as well as the discussion of nationalism, has been told to interfere with social work. The research presented is divided into five chapters. Literature has been reviewed in the first chapter on the issues related to nationalism in books and newspapers. In chapter second, the difference between the concept of nation, state and nationalism, as well as the difference between the nation and the state, has been told. In the third chapter, the rise of nationalism and the concept of Indian nationalism has been highlighted, and the fundamental elements of nationalism and different views related to it have been analyzed. Fourth chapter discusses nationalism debate that began with academic institutions. It has been studied in the abundance of newspapers and magazines for analyzing this debate of Nationalism, which started from Jawaharlal Nehru University, Jadavpur University and Ramjas College. In the fifth chapter, the contemporary debate of nationalism and the social work intervention in this debate has been told.

This research the side of nationalism in contemporary debate in academic institutions that have two opposite ideologies. Nationalism is discussed in all educational institutions of the country. After anti-nation slogans by some unknown people at Jawaharlal Nehru University on 9 February 2016, a debate started on

nationalism suddenly. This debate of nationalism is divided into two parts, one patriot and another traitor. This debate of Nationalism in all academic institutions of the country, including Jawaharlal Nehru University, was filled with language, religion, freedom of expression, right to disagreement etc. In this debate, some people believed that there are many shortcomings about social and political aspects in a country like India and due to these shortcomings there is nothing in this country that is worthy of pride. Here caste discrimination is at the peak, communalism has got here in politics. On the basis of language and religion, discrimination with other people has become a common assumption here. The second was a group that was emphasizing that India is a nation of many civilizations, where many cultures dwell among themselves. These cultures reside on a fixed plot, which we call India. We should always remain committed to this land and always be ready to keep its unity.

The debate that started with academic institutions, is that these debates have been wandering from its present core elements today. The question of nationalism was at the center of a debate, but this debate of educational institutions was being done only on the symbolic forms of the nation from the diverse forms of identity of the nation. This issue of nationalism debate has been deviating from its center point all the time. This debate of nationalism has been limited to just two groups. There was a group over which it was being accused of being a traitor and there was a camp that was defining the definition of patriotism based on its principles.

In the current debate, the current debate of nationalism, 'slogans' was discussed. Although these debates appeared far enough away from one of their true discussions on 'slogans' In this debate, there was a dispute about a slogan like 'Bharat Mata Ki Jai'. During the dispute a group was such that it was demanding that Bharat Mata be called Jai and a group was saying that only by saying 'Jai of Bharat Mata', it will prove that who is a patriot and who is not?

शोध सारांश/ Research Summary

There was a big debate on the issue of nationalism in educational institutions. This debate of nationalism has brought together all contemporary issues. These contemporaneous debates in nationalism were all those issues that directly and indirectly affected country, society, nation and common man, such as freedom of expression, treason, patriotism, violence, language, religious tension, slogans and equality etc.

Social work intervention on this broad and sensitive issue of nationalism is a very important step. In the research presented, social work intervention has been told on this issue of nationalism. Provision of training of trainers (TOT) for the establishment of counseling centers and cells in educational institutions as well as for faculty members, and the provision of Implementation of code of ethics to the educational institutions was kept in place. It will be the responsibility of the counseling center and cell to explain every issue related to nationalism in a theoretical and practical way, and tell them how to use nationalism in the country. It will be the duty of the society to work with the training of the trainer (TOT) to prepare faculty members for this work, how to discard their own ideology on issues of nationalism and adopt a balanced approach, and with this balanced approach, It is like understanding the issues related to nationalism and nationalism among the students and the general public. It is the obligation of the society to work in the educational institution to develop a system that will properly implement the Code of Ethics of educational institutions and at the same time regularly to make educational institutions, teachers and students aware about these issues, Organize workshops. Analytical method has been used in the research presented. In order to present and analyze the theoretical aspects of nationalism and contemporary debate as secondary sources, books, newspapers, magazines, dissertation and news channels have been studied.